स्वयं गनमैन ही हत्या पर कैसे हुआ था उतारू

गुड़गांव (म.मो.) 13 अक्तूबर को स्थानीय अतिरिक्त ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश (एडीजे) कृष्णकांत शर्मा की 37 वर्षीय पत्नी रितु व 17 वर्षीय पुत्र ध्रुव की दिन-दहाड़े, भरे बाजार में उनके ही गनमैन ने गोली मार कर हत्या कर दी। मीडिया खबरों के मुताबिक दोपहर करीब तीन बजे हरियाणा पुलिस का सिपाही बतौर गनमैन एवं ड्राइवर उक्त मां-बेटे को लेकर एक स्थानीय मॉल में शापिंग कराने लाया था। शॉपिंग के बाद जब वापस चलने के लिये रितु कार में बैठ चुकी थी और ध्रुव अभी बैठने वाला था कि सिपाही महिपाल यादव ने उसके सिर में दो गोलियां उतार दी, मां बचाने को कार से उतरी व चिल्लाई तो सिपाही ने पहले उनके साथ हाथा-पाई की फ़िर एक गोली उनकी छाती व दूसरी कंधे में मार दी। सिपाही के हाथ में पिस्तौल देखते हुए भीड़ में से किसी ने भी आगे बढने की हिम्मत नहीं की और सिपाही गाड़ी लेकर फ़रार हो गया जिसे जल्द ही पकड़ लिया गया। फ़रार होने से पूर्व उसने एडीजे कृष्णकांत को अपने फ़ोन से घटना बाबत सूचित भी कर दिया था।

एक रक्षक का इस तरह से भक्षक बन जाना और इस तरह से दो ज़िंदगियों को लील लेना वास्तव में ही बहुत दर्दनाक है। इस हादसे का पीड़ित भी आपराधिक न्याय व्यवस्था से जुड़ा एक अधिकारी है और गुनहगार इसी व्यवस्था के दूसरे सिरे यानी पुलिस से जुड़ा है। अपराध की गंभीरता को देखते हुये महिपाल को फ़ांसी नहीं तो उम्रकैद की सज़ा होना तो तय है। परन्तु इतने भर से मामला खत्म नहीं हो जाता। अब तमाम जज साहेबान अपनी-अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। चिंतित होना स्वाभाविक भी है, जब औरों से उन्हें सुरक्षित रखने के लिये जिम्मेदार पुलिस का सिपाही खुद ही हत्यारा बन जाय तो चिंता वाजिब है। लेकिन रक्षक का भक्षक बन जाने का असली कारण व निदान खोजने की अपेक्षा कोई आरपीएफ़ से तो कोई बीएसएफ़ आदि से गनमैन लाने की बात करता है तो कोई सेना से। परन्तु यह सोच ही गलत है।

सोचने वाली बात तो यह होनी चाहिये कि एक सिपाही रक्षक होते हुये भी भक्षक की दशा तक पहुंचा कैसे? उसके मानवीय व्यवहार में ऐसा परिवर्तन आया क्यों और कैसे? यह तो तय है कि यह परिवर्तन यकायक एक दिन में तो नहीं ही आया होगा और जब यह परिवर्तन आ रहा था तो जज साहब ने उसे समझने का प्रयास क्यों नहीं किया? पढे-लिखे विद्वान जज होने के नाते किसी भी व्यक्ति और खासकर उनके साथ एक-डेढ़ वर्ष से रहने वाले गनमैन के हाव-भाव तो उनको पहचानने ही चाहियें थे जिसमें वे नाकाम रहे।

वारदात के समय की दो बातें सामने आ रही हैं। एक तो यह कि मां-बेटे ने वहां कोई मूर्ति खरीदी थी, जो गाड़ी में रखते वक्त महिपाल के हाथों से गिर कर टूट गयी जिस पर ध्रुव ने भड़क कर सिपाही को काफ़ी अपशब्द कहे थे। दूसरी यह कि 17 वर्षीय ध्रुव को भी अपने हम-उम्र लड़कों की तरह गाड़ी चलाने का शौक रहता था। इसलिसे उसने महिपाल से चाबी मांगी थी जो उसने मना कर दिया तो ध्रुव भड़क गया और अनाप-शनाप बकने लगा।

पुलिस विभाग के लिखित नियमों के

अनुसार किसी भी गनमैन को किसी भी अधिकारी एवं नेता के साथ 3 माह से अधिक समय तक नहीं रहने दिया जायेगा। इसके दो मुख्य कारण हैं। पहला तो यह कि गनमैन रहने के दौरान वह अपने नियमित विभागीय कामों से बिल्कुल कट जाता है, दूसरे, वह जिसकी रक्षा में तैनात होता है उससे बहुत अधिक घुल-मिल जाता है या बहुत अधिक तनावग्रस्त हो जाता है जैसे कि महिपाल हो गया था। लेकिन सम्बन्धित पुलिस अधिकारी विभिन्न दबावों के चलते बरसों-बरस तक गनमैनों का तबादला नहीं करते। कुछ अफ़सर तबादला करने का प्रयास करते भी हैं तो अधिकारी व नेता इसका कड़ा विरोध करके तबादला रूकवा देते हैं। ऐसे सिपाही महकमे के लिये लगभग नाकारा से हो जाते हैं।

जजों के बारे में गनमैन के अलावा नायब कोर्ट का भी मसला पुलिस विभाग के लिये बड़ा अहम बना रहता है। लगभग सभी जजों को नायब कोर्ट (सिपाही) भी अपनी पसंद का चाहिये। जबकि कायदे से उसका जज से कोई ताल्लुक नहीं होता। वह तो सरकारी वकील के लिये एक प्रकार का मुंशी होता है जो पुलिस फ़ाइलों को संभालता है। लेकिन अब ये नायब कोर्ट सीधे अपने जज व उनके घरों तक जुड़े रहते हैं। एक अति वरिष्ठ पुलिस अधिकारी से इस बाबत बात करने पर उन्होंने यह कहने से भी गुरेज़ नहीं किया कि नायब कोर्ट, गनमैन जजों की दलाली भी करते हैं। इसी लिये वे उनके चहेते बन जाते हैं।

पुलिस जजों के दबाव में रहती है

आपराधिक न्याय व्यवस्था के दो पहिये हैं, पुलिस और जज। दोनों एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। एक का काम दूसरे के बिना नहीं चलता। इस चक्कर में पुलिस को जजों की कई जायज-नाजायज माननी पड़ती हैं। सारी स्थिति को समझने के लिये 1980 के दशक का एक किस्सा काफ़ी मौजू रहेगा। उस वक्त थाना सेन्ट्रल के एसएचओ को मुहर्रर ने बताया कि फ़लां एडीजे साहब बात करना चाहते हैं। एसएचओ ने पहले तो जी भर कर अपने मुहर्रर को गालियां दी, फ़िर एडीजे से बात की। इस गुस्से व गालियां देने का कारण पूछा तो एसएचओ ने बताया कि वह कह रहा है कि मुझ से आकर मिले, मैं क्यों मिलूं मेरा क्या काम है, मिलूंगा तो कोई न कोई फ़टीक ही गले पड़ेगी, मै अपने इलाका मैजिस्ट्रेट की फ़टीक भुगत लूं तो वही क्या कम है। जब तक पैट्रोल की भरा कर गाड़ी ना भेजूं रिमांड नहीं मिलता। पूरे सिस्टम को समझने के लिये यह उदाहरण ठीक वैसे ही पर्याप्त है जैसे हांडी में पक रहे चावलों का एक दाना।

एसआईटी का गठन

सरेआम हुये इस दोहरे हत्याकांड की तफ़्तीश के लिये वैसे तो एक थानेदार ही काफ़ी था, क्योंकि हत्या आरोपी तुरंत पकड़ लिया गया था, हत्या में प्रयुक्त पिस्तौल भी तुरंत बरामद हो गया था। ऐसा कुछ भी बाकी नहीं था जो पुलिस को खोजना था। खोजना केवल हत्या का उद्देश्य भर था जो आरोपी से पूछना होता है। परंतु मामला एडीजे से जुड़ा होने के कारण एक आईपीएस के नेतृत्व में एसआईटी गठित की गयी। इसमें 3 डीएसपी, 4 इन्स्पेक्टर व दर्जनों अन्य पुलिसकर्मी पेल दिये गये। जानकार तो यहां तक भी बता रहे हैं कि सारे केस की ओवर ऑल सुपरविजन का जिम्मा डीजी स्टेट क्राइम पीके अग्रवाल को भी सौंपा गया।

यह सारा ताम-झाम केवल न्यायपालिका को संतुष्ट एवं राज़ी रखने के लिये किया जा रहा है। भरोसेमंद सूत्र बता रहे हैं कि पुलिस की यह टीम हत्या के असली कारणों को छिपा कर लीपा-पोती करने में जुटी है। गनमैन के तथाकथित इकबालिया बयान के हवाले से बताया जा रहा है कि जज साहब व उनका परिवार तो बहुत बढ़िया मिलनसार व सद्व्यवहारी था। काम के अतिरिक्त बोझ के चलते महिपाल चिड़चिड़ा हो गया था, उसे गुस्सा अधिक आने लगा था। इसी गुस्से में उसने गोली चला कर हत्या कर दी। गनमैन के अतिरिक्त कार्य-बोझ को सही ठहराने के लिये पुलिस यह भी कह रही है कि वह अपने ड्यूटी के बाद टैक्सी भी चलाता था जो सरासर गलत है।

अच्छे दिन नहीं जी, बुरे दिन आने वाले हैं.....मोदी के!

ग्राउंड जीरो से विवेक की पड़ताली रिपोर्ट

लगता है अच्छे दिनों का वादा कर सत्तानशीं होने वाली मोदी सरकार की उपलब्धियों को गिनने और जानने का उचित समय अब आ ही गया। पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव को लेकर झूठ और फरेब के पुलिन्दे फैलाने के अनुभवी मोदी और शाह ब्रिगेड के जवान भक्त अब एक्टिव मोड में आ चुके हैं। खास कर के, अमित शाह के खुले मंच से अपने आइटी सेल के सिपाहियों को झूठी खबरें प्रचारित करने के आह्वान ने इन गोरिल्लाओं में नयी उर्जा भर दी है।

प्रधानमन्त्री के रूप में कार्यकाल का लगभग पूरा समय बिता लेने वाले मोदी गिरोह ने हालातों पर कैसे काबू पाया और भारत को लंदन और क्योटो बनाने के लिए क्या क्या किया ये जानने के लिए हमने उन विभागों की जमीनी हकीकत तलाशी जिसमें बेहतरी कर लंदन आज लंदन है और क्योटो भी है आज क्योटो।

35 वर्षीय मीरा जो दिल्ली भारतीय रिजर्व बैंक में सहायक प्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं, को मुंबई में होने वाली अपने छोटे भाई की शादी के कार्ड डाक से पार्सल करने थे। क्योंकि शादी 20 अक्टूबर की थी और समय कम तो मीरा दफ्तर के बाद रात को आठ बजे चावड़ी बाजार की उस दुकान पर पहुंची जिसे निमंत्रण कार्ड छापने का आर्डर दिया था। जीएसटी और डिजिटल इंडिया का राग अलापने वाले अरुण जेटली और मोदी के झूठ को हवा करते हुए दुकानदार ने तय राशि पर 12 प्रतिशत का टैक्स माँगा यदि भुगतान कार्ड से किया जाए तो; अन्यथा कैश लेने पर ऐसा कोई चार्ज नहीं।

जैसे तैसे कार्ड ले कर रात को ही मीरा दिल्ली गोल डाकखाना स्थित स्पीड पोस्ट ऑफिस जो हर दिन 24 घंटे खुला रहता है पहुंची ताकि जल्द से जल्द कार्ड पार्सल किये जा सकें। वहाँ पहुंचने पर रिसेप्शन पर बैठे प्रदीप कुमार मीणा ने पार्सल को पैक करने के लिए कहा। रात में पैकिंग का बंदोबस्त कहां से करें ये पूछने पर मीणा ने कहा, "आपकी

समस्या है मेरी नहीं, जहां से मर्जी करा के ले आओ।"

पास ही सटे पंचकुइयां बाजार के एक दुकानदार ने मीरा के सामान को गत्ते के मजबूत कार्टन में पैक कर दिया। अबकी बार प्रदीप मीणा ने मीरा को पार्सल कपड़े में पैक करा कर लाने के लिए बोला जिसके लिए मीरा दोबारा बाजार गईं और एक बोरीनुमा पैकिंग में अपना पार्सल पैक करा लायीं।

अब काउंटर पर मीणा ने नयी बात बताई कि अपने आईडी की एक कॉपी भी दीजिये। इसपर मीरा का खीझना स्वाभाविक था और थोड़ा तुनकती हुई वो रात के 10 बजे कॉपी भी करा कर ले आईं। पेमेंट करने के लिए ज्यों ही मीरा ने अपना कार्ड दिया प्रदीप मीणा चिढ़ते हुए बोले कि सिर्फ कैश से पेमेंट लेंगे क्योंकि उनके पास पीओएस मशीन नहीं है।

मीरा ने प्रदीप मीणा को लगभग डांटते हुए आपत्ति व्यक्त की कि क्यों नहीं है मशीन? वो भी तब जब बाहर ही मोदी की फोटो डिजिटल इंडिया के नाम पर लगा रखी है और एक बार में सब जानकारी क्यों नहीं दी जा रही? रात के इस पहर उनको परेशान किया जा रहा है। बात की तल्खी बढ़ती गई और अंत में प्रदीप मीणा ने बेशर्मी की हदें तो?ते हुए मीरा को "भाग यहाँ से" जैसे शब्दों के साथ विदा किया।

इस असभ्यता की शिकायत मीरा ने डाक विभाग की साइट पर दिए गए मेल पतों पर की जबकि हैरत की बात ये है कि मंत्रालय की साइट पर सचिव, और महानिदेशक तक के मेल पते गलत दिए हुए हैं। जाहिर सी बात है, सेवा क्षेत्र में इस प्रकार की अभद्रता का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अच्छे दिन तब होते जब प्रदीप मीणा सरीखे सेवकों को प्रशिक्षण के माध्यम से उपभोक्ता की कद्र करना और सेवा के स्तर को उत्कृष्ट बनाने का अहसास दिलाया गया होता। शायद रोज डूबते भारत सरकार के उपक्रम इतने से ही बच जाएं।

उत्तर प्रदेश की योगी पुलिस के विवेक तिवारी हत्याकांड को सभी जानते हैं पर ये भी जानने की जरूरत है कि रोज हजारों छोटे-मोटे मामलों में आम लोगों के साथ यह पुलिस क्या करती आ रही है। असम के अनिकेत चक्रवर्ती की गाड़ी चोरी होने पर गाजियाबाद वैशाली थाने के एसआइ खान ने उन्हें प्रताड़ित करना शुरू किया। आईआईटी दिल्ली से एमटेक की पढ़ाई करने वाले 23 वर्षीय अनिकेत की मोटरसाइकिल वैशाली थाना क्षेत्र से चोरी हो गई जिसकी शिकायत अनिकेत ने थाने में की। इस कंप्लेंट की कोई रिसीविंग दिए बिना उन्हें जल्दी ही गाड़ी मिलने के आश्वासन के साथ विदा कर दिया गया।

चार दिन बाद दोबारा अनिकेत अपने साथ एक दोस्त विवेक को थाने ले गए जिसने एसआई खान से अनिकेत की शिकायत की बाबत पूछा। अचानक वहाँ खड़े पांच एसआई रैंक के अधिकारी भड़क गए और विवेक को प्रताड़ित करने का प्रयत्न किया। विवेक ने बिना डरे कहा कि मेरे इस वाजिब सवाल पर आप भड़क कर ऐसे क्यों बात कर रहे हैं? क्या एक पावती तक शिकायतकर्ता को नहीं मिलनी चाहिए? इसपर खान ने कहा "हम कोई औरत हैं जो चूड़ियाँ हिला हिला कर बात करें, पुलिस ऐसे ही बात करती है, जा घर जा मिल जाएगी गाड़ी तेरी।" विवेक ने कहा आप तो ऐसे बोल रहे हैं जैसे गाड़ी आपके पास है, यदि इस बीच उस गाड़ी से कोई अपराध होता है तो उसकी जिम्मेवारी किसकी होगी? बस फिर क्या था, सभी एसआइ विवेक पर कर्कश आवाज के साथ टूट पड़ा।

फ़रीदाबाद सेक्टर 9 स्थित एसबीआई बैंक में पैसे जमा कराने आये 62 वर्षीय बुजुर्ग महिपाल सिंह को ये कह कर वापस भेज दिया गया कि दूसरे राज्य में पैसे जमा कराने के लिए 12 बजे के बाद आओ। महिपाल सिंह 2:30 बजे आये और इस बार ये कह कर टाल दिया कि 2 बजे से पहले आना था। महिपाल के साथ अलग अलग बैंकों में होने वाली एक ही प्रकार की ये तीसरी घटना थी, इसपर उन्होंने केशियर से ऐसा कोई सर्कुलर दिखाने की बात कही जिसमे ऐसा आदेश दर्ज हो। कैशियर ने लताड़ते हुए कहा, अब तो मैं बिल्कुल भी न करूँ तेरे पीसे जमा।

फ़रीदाबाद के बीके अस्पताल में दतिया की रहने वाली 45 वर्षीय लीला का कार्ड नहीं बनाया गया, क्योंकि उनके पास आधार कार्ड नहीं था। लीला के शब्दों में "औरन के तो बना रहा था वो मौजा मेरो न बनाया, बोला आधार कारड दे, मैं बोली भई अब तो कोरट ने मने कद्द दई, बस भईया इत्ते पे भड़क गौ और बोला ज्यादा कानून मत बता और मोये भगा दिओ।" एक अन्य कर्मचारी ने लीला को समझाया, आधार नहीं है तो कोई बात नहीं पर ऐसे सवाल कर के क्यों उसका मूड बिगाड़ रही हो, रिक्वेस्ट कर के मारी मांग ले मान जाएगा। लीला के माफी माँगने के बाद भी कार्ड नहीं बना।

ये सब वे सरकारी महकमे हैं जहाँ आम आदमी को रोज आना जाना और झेलना होता है। सवाल ये है कि 2014 में अच्छे दिनों की चुस्की चुसा कर मोदी जी सत्ता में आये और आज अच्छे दिनों का नाम तक क्यों नहीं लेते? अच्छे दिनों से क्या मतलब था आपका मोदी जी? आपके अच्छे दिन या जनता के। यदि अच्छे दिन आ गए होते तो पुलिस एफआइआर दर्ज कर रही होती, डाक विभाग मीरा को रात के 10 बजे धक्के न खिला रहा होता, और तो और ये न बोलता कि भाग यहाँ से और जा कर दे मेरी शिकायत जिससे भी करनी है, बीके अस्पताल में आधार के बिना लीला का इलाज न रुकता और बैंक किसी ग्राहक को यहाँ वहाँ नहीं भगाता।

कहां तो नोटबंदी का मात्र एक फायदा मोदी और जेटली बहुत ढूंढ कर लाये थे कि भारत का डिजिटल पेमेंट में आगे बढ़ना शामिल था (जो भी झूठ ही था) और खुद भारत सरकार के उपक्रम में ये सुविधा नहीं, ये तो चिराग तले अँधेरा वाली बात है। साढे चार साल के भाजपा शासन में आज तक किसी क्षेत्र में कोई ऐसा ट्रेनिंग प्रोग्राम नहीं चला जिससे जन सुविधाओं में 2014 के मुकाबले कुछ बेहतरी हुई हो। बस राफेल डील जैसे भ्रष्टाचार के पुराने कांग्रेसी रास्तों से अम्बानियों और अदानियों के दिन अच्छे होते गये, बाकी जनता की तो बस शामत ही आई।

हाँ, राम मंदिर तक बनवा डालने की बात करने वाले मोदी ने बस विदेश दौरे किये और वह भी सिर्फ नए कपड़ों को साधने के लिए। बढ़ी बात ये है कि चुनावों को देखते हुए मोदी के मंत्री रो? नयी तारीख दे दे रहे हैं कि मंदिर अब बना कि तब। लोग आज जानना चाहते हैं कि मोदी जी सिर्फ इतना बता दें कि 2014 से 2018 तक ऐसा क्या किया गया जिससे जनता के सरकारी धक्के कम हो गए? मोदी के भक्त जरूर मोदी को एक और मौका देने के नाम पर शायरी गढ़ने में लगे हैं" ये करें या वो करें, ऐसा करें वैसा करें, जिन्दगी दो दिन की है, दो दिन में हम क्या क्या करें।"

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06